

## स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारतीय अर्थव्यवस्था पर नोट्स:

पूर्व-ब्रिटिश अर्थव्यवस्था: भारत एक समृद्ध कृषि अर्थव्यवस्था थी, जो अपने हस्तशिल्प उद्योग के लिए जानी जाती थी। बंगाल मलमल (एक बढ़िया सूती कपड़ा) के लिए प्रसिद्ध था, विशेष रूप से ढाका मलमल के लिए।

**राष्ट्रीय आय का अनुमान:** दादा भाई नौरोजी, विलियम डिग्बी, फिंडले शिरास, डॉ वीकेआरवी राव और आरसी देसाई जैसे कई अर्थशास्त्रियों ने राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाया। दादा भाई नौरोजी ने सबसे पहले राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाया था जबकि डॉ राव के अनुमानों को अधिक महत्वपूर्ण माना गया था। 20 वीं शताब्दी की पहली 50 वर्षों के दौरान भारत की राष्ट्रीय आय वृद्धि 2% से कम थी जबकि प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि केवल 0.5% थी।

**कृषि क्षेत्र:** भारतीय कृषि भू-राजस्व प्रणालियों (जमींदारी, महलवारी, रैयतवाड़ी), कम उत्पादकता (सिंचाई सुविधाओं की कमी और उर्वरकों के कम उपयोग), किसानों, जमींदारों और सरकार द्वारा निवेश की कमी के कारण स्थिर और पिछड़ी हुई थी। इसके अलावा, व्यावसायीकरण (जूट, कपास, इंडिगो आदि में) के कारण खाद्यान्न उत्पादन की कृषि भूमि को धीरे धीरे कम कर दिया गया जिससे खाद्यान्नों की कमी हो गई, जिसके परिणामस्वरूप कई अकाल पड़े।

**औद्योगिक क्षेत्र:** अच्छी तरह से विकसित हस्तशिल्प उद्योग भेदभावपूर्ण व्यापार शुल्क नीति से नष्ट हो गया था जो कच्चे माल के शुल्क मुक्त निर्यात, तैयार माल के शुल्क मुक्त आयात और तैयार हस्तशिल्प उत्पादों के निर्यात पर भारी शुल्क पर केंद्रित था। इस वि-औद्योगीकरण प्रक्रिया के दो उद्देश्य थे - भारत को (i) ब्रिटेन को सस्ते कच्चे माल का निर्यातक बनाना और (ii) ब्रिटेन से तैयार माल का आयातक बनाना। पूंजीगत और आधुनिक उद्योगों की कमी थी। 20 वीं शताब्दी से पहले, कुछ भारतीय प्रभुत्व वाले कपास कारखाने पश्चिमी भारत (महाराष्ट्र और गुजरात) में स्थापित किए गए थे, जबकि यूरोपीय प्रभुत्व वाले जूट कारखाने बंगाल में स्थापित किए गए। TISCO की स्थापना 1907 में हुई थी जबकि चीनी, सीमेंट, कागज आदि उद्योग द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान स्थापित हुए। सार्वजनिक क्षेत्र में केवल रेलवे, बिजली, संचार, डाक और कुछ विभागीय उपक्रम थे।

**विदेश व्यापार:** भारत कच्चे माल का निर्यातक और तैयार माल का आयातक बन गया। हालांकि, भारत के पास व्यापार का अधिशेष संतुलन था परन्तु भारतीयों को इससे कोई लाभ नहीं हुआ और औपनिवेशिक सरकार द्वारा युद्ध, उसके कार्यालयों और अदृश्य वस्तुओं के आयात पर खर्चों को पूरा करने के लिए इसका उपयोग किया। स्वेज नहर के खुलने (1869) से व्यापार की लागत कम हो गयी। ब्रिटेन के अलावा, भारत के अन्य प्रमुख व्यापारिक भागीदार चीन, श्रीलंका (सीलोन) और ईरान (फारस) थे।

**जनसांख्यिकीय स्थिति:** 1881 में पहली जनगणना हुई। 1921 महान विभाजन का वर्ष था क्योंकि इसके बाद भारत ने जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण में प्रवेश किया और 1921 के बाद इसकी आबादी कभी कम नहीं हुई। जन्म दर और मृत्यु दर दोनों उच्च थे। कुल साक्षरता दर 16% थी जिसमें महिला साक्षरता केवल 7% थी। शिशु मृत्यु दर (218/1000) अधिक थी जबकि जन्म के समय जीवन प्रत्याशा (32 वर्ष) बहुत कम थी।

**व्यावसायिक संरचना:** तीन चौथाई आबादी कृषि से अपनी आजीविका प्राप्त करती थी। दक्षिणी राज्यों, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल जैसे कुछ राज्यों में कृषि में कार्यबल में गिरावट देखी गई जबकि उड़ीसा, राजस्थान और पंजाब में वृद्धि देखी गई।

**बुनियादी ढांचा:** रेलवे 1850 में शुरू किया गया था और पहली ट्रेन 1853 में बॉम्बे से ठाणे तक चली थी। पोस्ट और टेलीग्राफ भी सरकार द्वारा विकसित किए गए। हालांकि, जो भी बुनियादी ढांचा विकसित किया गया था, वह अंग्रेजों के लाभ के लिए था, जैसे रेलवे जिसका उपयोग कच्चे माल को बंदरगाहों और तैयार माल को देश के विभिन्न हिस्सों में ले जाने के लिए किया जाता था।

**अंग्रेजों द्वारा सकारात्मक योगदान:** अनजाने में ही सही, अंग्रेजों ने भारत को बेहतर परिवहन और संचार, प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था प्रदान की। कृषि के क्षेत्र का विस्तार हुआ।

**निष्कर्ष:** हम कह सकते हैं कि अंग्रेजों ने भारत को एक औपनिवेशिक (भारत पर ब्रिटिश शासन), अर्थ सामंती (जमींदार), स्थिर (2% जीडीपी और 0.5 प्रति व्यक्ति वृद्धि), पिछड़ी (कम उत्पादकता और उच्च साक्षरता), क्षीण (भौतिक संपत्ति का तेजी से मूल्यहास) और एक खंडित (विभाजन) अर्थव्यवस्था बना दिया। हालांकि, इसने आधुनिक शिक्षा प्रणाली, उद्योगों, परिवहन, संचार प्रणाली और प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था की नींव रखी।

कुछ प्रमुख अवधारणाएँ:

**उपनिवेशवाद:** उपनिवेशवाद एक ऐसी प्रणाली है जिसमें एक देश दूसरे देश पर शासन करता है और अपने लाभ के लिए शासित देश के संसाधनों का उपयोग करता है।

**जमींदारी प्रथा:** इस प्रणाली के तहत जमींदारों को लगान एकत्र करने के उद्देश्य से किसानों और सरकार के बीच मध्यस्थ बनाया गया था। इन जमींदारों को एकत्रित लगान का एक निश्चित हिस्सा सरकार को जमा करना पड़ता था, ऐसा नहीं करने पर उनकी जमींदारी वापस ले ली जाती थी।

**जीवन प्रत्याशा:** यह किसी व्यक्ति के भविष्य में जीवित रहने की संभावना के अपेक्षित वर्षों को संदर्भित करता है।